

क्रिकेट खेल के सामान्य ज्ञान

सबसे पहले यह जान लेना आवश्यक है कि क्रिकेट खेल के सामान्य ज्ञान क्या हैं? मैच के दौरान किन-किन शब्दों का प्रयोग किया जाता है तथा उनके अर्थ क्या हैं? आदि बातों की जानकारी आवश्यक है।

क्रिकेट मैच के प्रकार

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कुल तीन प्रकार के मैच खेले जाते हैं, जिन्हें सामान्य मैच भी कह सकते हैं। ये हैं—

1. टेस्ट मैच
2. एकदिवसीय मैच
3. 20-20 मैच।

1. टेस्ट मैच : यह पाँच दिवसीय मैच होता है, जिसमें प्रत्येक टीम दो-दो पारियाँ खेलती हैं। अंतिम पारी के आधार पर टीम विजेता चुनी जाती है।

2. एकदिवसीय मैच : यह 50-50 ओवरों का मैच होता है। हार-जीत का फैसला उसी दिन हो जाता है। ज्यादा रन बनाने वाली टीम विजेता चुनी जाती है।

3. 20-20 मैच : यह 20-20 ओवरों का मैच होता है, जो लगभग तीन घंटे चलता है। इसमें भी ज्यादा रन बनाने वाली टीम विजेता होती है।

टीम

ग्यारह खिलाड़ियों की एक टीम होती है। इन खिलाड़ियों के नाम की घोषणा टॉस से पहले की जाती है। उसके बाद किसी तरह का परिवर्तन संभव नहीं है, हाँ, अगर कोई क्रिकेट खिलाड़ी मैच के दौरान चोटिल हो जाता है और खेलने की स्थिति में नहीं होता, तो आवश्यक औपचारिकताओं के बाद उसकी जगह पर नए खिलाड़ी को लाया जाता है। इसके बारे में आवश्यक नियम-प्रावधानों का उल्लेख आगे करेंगे।

टॉस करना

मैच आरंभ होने से पूर्व दोनों टीमों के कप्तान मैदान में आते हैं और बल्लेबाजी अथवा क्षेत्ररक्षण के अधिकार का फैसला टॉस अथवा सिक्के उछालकर करते हैं। जो टीम टॉस जीतती है; वही टीम इस बात का फैसला करती है कि वह बल्लेबाजी अथवा फील्डिंग में से क्या लेना पसंद करेगी। इसका निर्णय टॉस जीतनेवाला कप्तान करता है। इसका फैसला तुरंत किया जाता है।

अंपायर

मैच को सुचारु रूप से चलाने तथा व्यवस्था देखने के लिए अंपायरों की नियुक्ति की जाती है।

आमतौर पर मैच के दौरान मैदान में दो अंपायर होते हैं। एक ओवर पूरा होने पर इन अंपायरों का स्थान (मैदान

में) बदल दिया जाता है।

मैच में अंपायर की भूमिका

- अंपायर खेल के मैदान और पिच का निरीक्षण करके यह फैसला करते हैं कि यह खेलने योग्य है अथवा नहीं।
- अंपायर प्रकाश तथा मौसम का मुआयना करके यह पता लगाते हैं अथवा निर्णय करते हैं कि मैच शुरू करना सही है अथवा नहीं।
- अंपायर खिलाड़ियों से क्रिकेट के नियमों का पालन करने की अपेक्षा रखते हैं। अगर कोई खिलाड़ी विरुद्ध आचरण करता है, तो उसे चेतावनी दी जाती है अथवा खिलाड़ी के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई करने की सिफारिश की जाती है।
- अंपायर खेल पर कड़ी नजर रखते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि मैच नियमानुसार चल रहा है।
- बॉलर तथा बैट्समैन के साथ-साथ गेंद पर भी कड़ी नजर रखते हैं।
- गेंद के बाउंस पर कड़ी नजर रखते हैं।
- ये नो बॉल, वाइड बॉल, फ्री-हिट, चौका, छक्का आदि को बताने के हाथ से इशारा करते हैं।
- आकस्मिक परिस्थितियों में अंपायर खेल को कुछ समय के लिए अथवा स्थायी रूप से रोक सकते हैं।
- किसी खिलाड़ी के विरुद्ध पेनॉल्टी निर्धारित करने में अंपायरों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
- मैदान में संदेहास्पद स्थितियों को सुलझाने के लिए तीसरे अंपायर (Third Umpire) की नियुक्ति की जाती है, जो वीडियो रिव्यू देखने के बाद 'आउट' अथवा 'नॉट आउट' का फैसला करता है।
- खेल के मैदान में कभी-कभी दो विपरीत टीम के खिलाड़ियों के बीच किसी-किसी बात को लेकर झगड़ा हो जाता है अथवा उनके बीच तू-तू मैं-मैं की नौबत आ जाती है। इन झगड़ों अथवा विवादों को सुलझाने की जिम्मेवारी अंपायर पर होती है।
- अंपायरों को अंक की गणना की सत्यता को प्रमाणित करना पड़ता है।
- इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि मैच को सुचारु रूप से संचालित करने की पूर्ण जिम्मेवारी अंपायरों पर होती है।



मैच रेफरी

एक मैच रेफरी होता है, जो मैच की हर स्थिति पर नजर रखता है।

ओवर (Over)

- एक ओवर में छह गेंदे फेंकी जाती है।
- ओवर में 'नो बॉल' नहीं गिनी जाती।
- ओवर में 'वाइड बॉल' नहीं गिनी जाती।
- बॉलिंग अथवा बैटिंग विकेट के दोनों छोरों से बारी-बारी की जाती है।
- एक ओवर के बाद बैटिंग की स्थिति बदल जाती है, यानी 6 बॉल का ओवर पूरा करने के बाद बैट्समैन दूसरे छोर पर आ जाता है।

स्कोरिंग (Scoring)

- किसी टीम का स्कोर सभी खिलाड़ियों द्वारा बनाए गए रनों के योग से बनता है।
- रन तब बनता है—
 - जब बैट्समैन बॉल पर प्रहार के उपरांत एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँच जाए। इसी तरह बैट्समैन का साथी खिलाड़ी दूसरे छोर पर पहुँचता है। अगर गेंद मैदान में ही हो और विपक्षी टीम के खिलाड़ी द्वारा स्टंप (Stump) करने से पहले बैट्समैन पीच की सीमा रेखा पर पहुँच जाता है, तो बैट्समैन को रन दिए जाते हैं।
 - जब गेंद हिट के बाद बाहरी सीमा रेखा के ऊपर से बाहर चली जाए (6)।
 - जब गेंद हिट के बाद बाउंड्री पार कर जाए तो (4)।
 - जब वाइड बॉल (1 रन)।
 - जब नो बॉल का इशारा होता है (1 रन)।
 - जब बाई का इशारा हो।
 - जब लेग बाई का इशारा हो।
 - गेंद खोने की स्थिति में।
- ये सब दंड का प्रावधान हैं। गेंद के बाहरी सीमा रेखा पार करने अथवा स्पर्श करने पर चार रन दिए जाते हैं, जो मैदान के बाहरी छोर पर स्थित होती है। गेंद के बाउंड्री पार करने छह रन दिए जाते हैं। छह रन तब दिए जाते हैं। जब बैट से लगने के बाद गेंद सीधे सीमा रेखा के बाहर गिरे। अन्य स्थितियों में एक अथवा दो रन। अगर गेंद मैदान में ही रहती है, तो यह बैट्समैन पर निर्भर करता है कि वे कितने रन लेते हैं। बैट्समैन अधिक-से-अधिक रन ले सकते हैं।
- यदि खिलाड़ी एक छोर से दूसरे छोर तक दौड़कर रन पूरा न करे, तो उसे लघु रन कहा जाता है। मगर इस रन की गणना नहीं की जाती है।
- यदि बैट्समैन द्वारा गेंद को हिट करने के बाद उसे विपक्षी टीम के खिलाड़ी द्वारा कैच कर लिया जाता है, तो भले ही बल्लेबाजों ने अपना छोर बदल लिया हो, कोई रन नहीं मिलता। इसको सीधा-सीधा आउट भी कहा जा सकता है।
- रन आउट की स्थिति में भी रन की गणना नहीं की जाती है।
- यदि बॉल के सीमा क्षेत्र के बाहर जाने से पूर्व सीमा क्षेत्र पार करने से होनेवाली रन प्राप्ति (चार रन) से अधिक रन बन जाएँ, तो अधिक रन दिए जाते हैं।

- फील्डिंग के समय ओवरथ्रो (Ovethrow) से गेंद के सीमा रेखा पार करने के परिणामस्वरूप बन चुके रन भी खिलाड़ी के खाते में जोड़ दिए जाते हैं। यानी चार रन (सीमा रेखा पार करने के) + बल्लेबाजों के रन = कुल रन।
- ओवरथ्रो के रन खिलाड़ी के व्यक्तिगत स्कोर में सम्मिलित नहीं किए जाते हैं।

स्कोरर (Scorer)

खेल में खिलाड़ियों द्वारा बनाए गए रनों का लेखा-जोखा रखने के लिए एक अथवा दो स्कोरर की नियुक्ति की जाती है। स्कोरर अंपायर के इशारे पर काम करते हैं तथा उनके संकेतों पर सतर्क नजर रखते हैं। जैसे ही अंपायर का आदेश अथवा इशारा होता है, वे चौकस होकर विद्युत की गति से अपना काम पूरी सतर्कता के साथ करते हैं। भले ही रन के परिणाम कुछ और हों, लेकिन वो अंपायर के आदेश का पालन करने के लिए मजबूर हैं।

रन आउट (Run Out)

आपने क्रिकेट मैच में खिलाड़ी को रन आउट होते देखा होगा। मैच के दौरान रन आउट होनेवाले खिलाड़ियों की एक लंबी फेहरिस्त है और संभवतः क्रिकेट के सभी बड़े-बड़े खिलाड़ी भी कभी-न-कभी रन आउट हुए हैं।

यह रन आउट क्या है? साधारण अर्थ में यह कहा जा सकता है कि रन बनाने की कोशिश के दौरान खिलाड़ी का आउट हो जाना।

जब बल्लेबाज गेंद को हिट करने के बाद रन बनाने के लिए एक छोर से दूसरे छोर तक दौड़ लगाते हैं और विकेट की निर्धारित रेखा को स्पर्श करने से पहले यदि विपक्षी खिलाड़ी द्वारा फेंकी गई गेंद स्टंप को टच कर जाती है अथवा विपक्षी खिलाड़ी द्वारा स्वयं ऐसा कर दिया जाता है, तो वह बल्लेबाज रन आउट करार दिया जाता है, जो पोजीशन लेने के लिए भाग रहा होता है।

बाउंड्री (Boundary)

बाउंड्री की दूरी मैदानों के आकार पर निर्भर करती है। इसलिए इसका कोई निर्धारित नियम नहीं है कि बाउंड्री की दूरी क्या हो, परंतु विकेट से इसकी दूरी लगभग 75 से 80 गज होनी ही चाहिए।

नो बॉल (No Ball)

जब गेंदबाज बॉल को ठीक प्रकार से नहीं फेंक पाता अथवा गेंद फेंकने के समय बल्लेबाज निर्धारित रेखा का अतिक्रमण करता है। (अपना एक पाँव निश्चित रेखा के पार रखता है), आदि कुछ ऐसी ही स्थितियों में नो बॉल दंडस्वरूप दी जाती है। यह अंपायर के संकेत से होता है।

आइए देखते हैं, नो बॉल किन-किन स्थितियाँ में दी जाती है—

- यदि गेंदबाजी करते समय गेंदबाज का पैर निश्चित रेखा (जिसको खेल की भाषा में पॉपिंग क्रीज कहते हैं, यह विकेट के आगे तथा समानांतर खींची गई सीधी रेखा होती है) के पार अथवा बाहर चला जाए।
- यदि गेंदबाज गेंद को ओवरथ्रो कर रहा हो।
- यदि गेंदबाज अंपायर को बताए बिना साइड बदल लेता है।
- यदि गेंदबाज अंपायर को बताए बिना जिस हाथ से गेंदबाजी कर रहा हो, वह बदल ले।

- यदि गेंदबाज द्वारा फेंकी गई गेंद बल्लेबाज तक पहुँचने से पूर्व दो बार टप्पा खा लेती है।
- यदि निर्धारित दायरे में खड़े फील्डरों की संख्या सही न हो।
- यदि टेस्ट मैच में एक ही ओवर में तीन या उससे ज्यादा बार गेंद बल्लेबाज के कंधे के ऊपर से गुजर जाए।
- यदि एकदिवसीय मैच में गेंदबाज द्वारा फेंकी गई गेंद एक ही ओवर में दो बार या उससे अधिक बल्लेबाज के कंधे के ऊपर से गुजर जाए।

नो बॉल के दंड

- यदि नो बॉल पर कोई और रन न बने तो टेस्ट और एकदिवसीय मैच में एक रन दिया जाता है।
- यदि नो बॉल पर कोई और रन न बने, तो '20-20' के मैच में दो रन दिए जाते हैं।
- यदि बैटिंग करनेवाला खिलाड़ी नो बॉल को खेलता है, तो उसके फलस्वरूप खिलाड़ी द्वारा बनाए गए रन+नो बॉल का रन=कुल रन खिलाड़ी के खाते में जमा कर दिए जाते हैं।
- आजकल एकदिवसीय क्रिकेट मैच में नो बॉल के लिए दंडस्वरूप फ्री-हिट दिया जाता है।
- 20-20 क्रिकेट में नो बॉल के बाद फ्री-हिट दिया जाता है।

फ्री-हिट (Free-Hit)

फ्री-हिट का संकेत होने पर बल्लेबाज निर्भीक होकर गेंद पर चौके-छक्के लगाने की कोशिश करता है, क्योंकि फ्री-हिट की स्थिति में बल्लेबाज केवल रन आउट ही हो सकता है। अन्य किसी भी तरह से बल्लेबाज को आउट नहीं किया जा सकता। अनेक क्रिकेट खिलाड़ियों ने इस स्थिति का पूरा लाभ उठाया है और चौके-छक्के लगाए हैं। दूसरी ओर, फ्री-हिट की स्थिति में गेंदबाज अत्यंत सतर्कता से बॉलिंग करता है, क्योंकि उसके दिमाग में फ्री-हिट की स्थितियाँ होती हैं, अतः वह सँभलकर बॉलिंग करता है।

नो बॉल एक प्रकार से दंडस्वरूप है यह इसलिए चार्ज किया जाता है, ताकि खिलाड़ी सँभलकर बॉलिंग करे तथा गलती की पुनरावृत्ति न कर सके। खेल के व्यवस्थित ढंग से संचालन के लिए ही नियम बनाए गए हैं। अगर ये नियम व व्यवस्था न हो, तो खेल की दिशा भटक सकती है तथा यह अपने उद्देश्य को पूरा नहीं कर पाता है।

अंपायर द्वारा नो बॉल अथवा फ्री-हिट का संकेत उँगली और हाथ के द्वारा किया जाता है। अंपायर द्वारा नो बॉल का संकेत एक हाथ को एक ओर फैलाकर किया जाता है।

वाइड बॉल (Wide Ball)

वाइड का अर्थ होता है—चौड़ा। जो बॉल विकेट से इतनी हटकर हो कि बल्लेबाज की सामान्य स्थिति में पहुँच से बाहर हो, तो गेंदबाज द्वारा फेंकी गई गेंद 'वाइड बॉल' कहलाती है अथवा गेंदबाज द्वारा फेंकी गई गेंद इतनी अधिक ऊँची हो कि बल्लेबाज की सामान्य स्थिति में पहुँच से बाहर हो, तो भी अंपायर द्वारा 'वाइड बॉल' का इशारा किया जाता है। अंपायर द्वारा वाइड बॉल का संकेत दोनों हाथ फैलाकर किया जाता है।

'वाइड बॉल' पर विपक्षी टीम के स्कोर में एक रन जोड़ दिया जाता है। 'वाइड बॉल' पर मिले रन विपक्षी टीम के खाते में जोड़ दिया जाता है, लेकिन इसके साथ वाइड गेंद का उल्लेख किया जाता है।

मृत गेंद (Dead Ball)

मृत गेंद (Dead Ball) खेल में वैध नहीं मानी जाती है, जब—

- गेंद फेंकने से पहले ही गेंद गेंदबाज के हाथ से फिसल जाए, (मृत गेंद)।
- अंपायर को ऐसा लगता है कि बल्लेबाज खेलने के लिए अभी तैयार नहीं हुआ है, तब तक अंपायर अपने हाथ के इशारे से गेंदबाज को रोककर तैयार होने का रखता है, जब तक बल्लेबाज का सिग्नल नहीं मिल जाता है।
- जब बल्लेबाज अपने स्थान पर न हो और गेंदबाज गेंद फेंक देता है (ऐसा अचानक होता है)।
- बल्लेबाज द्वारा गेंद को हिट करने से पहले ही विकेट की गिल्लियाँ (एक या एक से ज्यादा) अपने आप गिर जाएँ, ऐसा किसी कारणवश हो सकता है, आदि स्थितियों में गेंदबाज द्वारा फेंकी गई गेंद मृत मानी जाती है तथा इसको वैध नहीं माना जाता है।

प्रतिस्थापन (Substitution)

खेल के मैदान में खिलाड़ियों का चोटिल अथवा घायल होना, कोई अचरज की बात नहीं है। क्रिकेट के खेल में भी मैच के दौरान खिलाड़ी घायल होते हैं, चोटिल होते हैं। ये चोटें गेंदबाज द्वारा फेंकी गई गेंद से हो सकती हैं। ये चोटें बल्लेबाज के बैटिंग करने के गलत तरीके से भी लग सकती हैं अथवा जब बल्लेबाज रन लेने की कोशिश करता है, तब वह जख्मी हो सकता है, उसके पाँव फिसल सकते हैं, फील्डिंग के दौरान भी खिलाड़ी घायल हो जाते हैं, बॉल को कैच करने की कोशिश में विकेटकीपर घायल हो सकता है, गेंद को बाउंड्री से बचाने के लिए उसे रोकने की कोशिश में खिलाड़ी घायल हो जाता है। कहने का अर्थ यह है कि विपक्षी या एक्टिव, किसी भी टीम के खिलाड़ी मैच के दौरान दुर्घटनाग्रस्त हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में मैच को कुछ देर के लिए रोक दिया जाता है।

चोटिल खिलाड़ी का तत्काल ट्रीटमेंट किया जाता है। यदि खिलाड़ी को गंभीर चोटें आई हैं तथा वह खेलने योग्य नहीं होता, तो उसकी जगह पर दूसरे खिलाड़ी को लाया जाता है। इसी को प्रतिस्थापन अथवा Substitution कहा जाता है।

प्रतिस्थापन के खिलाड़ी सुरक्षित रखे गए खिलाड़ियों में से होते हैं। ऐसे ही आकस्मिक अवसर के लिए प्रत्येक टीम में अतिरिक्त खिलाड़ियों को रखा जाता है, लेकिन प्रतिस्थापन के परिणामस्वरूप मैदान में आया नया खिलाड़ी न तो बॉलिंग कर सकता है, न ही बैटिंग। कभी-कभी बल्लेबाज के जख्मी होने पर वह दौड़ नहीं लगा पाता, तो रन लेने के लिए खिलाड़ी का प्रतिस्थापन किया जाता है। यह खिलाड़ी बैटिंग नहीं कर सकता। बैटिंग चोटिल बल्लेबाज करता है तथा रन प्रतिस्थापन का खिलाड़ी बनाता है।

जिस खिलाड़ी के स्थान पर नए खिलाड़ी का प्रतिस्थापन हुआ है, अगर चोटिल खिलाड़ी खेलने योग्य स्थिति में लौट आता है, तो वह फिर से खेल में भाग ले सकता है, वह बल्लेबाजी कर सकता है, क्षेत्ररक्षण कर सकता है, गेंदबाजी कर सकता है। पुराने खिलाड़ी के सक्रिय अवस्था में लौटने पर नया खिलाड़ी वापस अपनी जगह लौट जाता है।

रनर (Runner)

जैसाकि मैंने चर्चा की है कि प्रतिस्थापन का खिलाड़ी मैच के घायल अथवा उसके न खेलने की स्थिति में ही लाया जाता है। अब मान लें कि मैच के दौरान बल्लेबाज जख्मी हो जाता है तथा वह दौड़ने की स्थिति में नहीं

होता, हालाँकि वह बैटिंग कर सकता है, तब बल्लेबाज को रनर दिया जाता है। यह अंपायर पर निर्भर करता है, जो मेडिकल विशेषज्ञ की रिपोर्ट के बाद फैसला लेता है।

रनर का काम सिर्फ रन लेना होता है। हालाँकि खेल के सारे नियम उसपर भी लागू होते हैं। रनर के आउट (रन आउट) होने पर बैट्समैन आउट हो जाता है।

रनर को बुलाने का फैसला आकस्मिक स्थितियों में किया जाता है और यह वैध होता है।

बाई (Bye)

क्रिकेट मैच में आपने 'बाई' शब्द का प्रयोग होते सुना होगा अथवा जब क्रिकेट मैच का प्रसारण टी.वी. पर हो रहा हो, तो आपने मैच का आनंद लेते समय इस शब्द को देखा-सुना होगा।

जरा उस परिस्थिति पर गौर करें, जब अंपायर का इशारा 'बाई' का होता है (अंपायर द्वारा बाई का इशारा एक खुला हाथ सिर के ऊपर ले जाकर किया जाता है)।

आपने देखा होगा कि यह गेंद की विशेष स्थिति होती है। हालाँकि गेंदबाज ठीक प्रकार से गेंद फेंकता है, लेकिन कभी-कभी गेंद बल्लेबाज के बैट अथवा शरीर को स्पर्श किए बगैर निकल जाती है। यदि उस पर रन बन जाएँ, तो उसे बाई रन माना जाता है।

लेग बाई (Leg Bye)

'लेग बाई' भी बाई की एक अवस्था है, जब गेंद बल्लेबाज के बैट अथवा हाथ को छोड़कर उसके कपड़ों अथवा शरीर को स्पर्श करती है।

लेग बाई की अवस्था तब आती है, जब गेंदबाज द्वारा ठीक प्रकार से (नियमानुसार) की गई बॉलिंग बल्लेबाज के बैट अथवा हाथ को छोड़कर उसके वस्त्र अथवा शरीर को स्पर्श करते हुए गेंद गुजर जाती है। यदि इस पर रन बन जाते हैं, तो ऐसे रन को लेग बाई रन के अंतर्गत रखा जाता है। लेग बाई के रन इसके अंतर्गत दर्ज किए जाते हैं।

यहाँ यह भी ध्यान देने की बात है कि लेग बाई तभी घोषित हो सकता है, जब बल्लेबाज ने गेंद को मारने का प्रयास किया हो।

अंपायर द्वारा लेग बाई का इशारा घुटने अथवा टाँग को उठाकर हाथ से स्पर्श करके दिया जाता है।

आउट (Out)

'आउट' शब्द से आप भलीभाँति परिचित होंगे। आउट का सामान्य अर्थ है—बाहर यानी खिलाड़ी खेल से बाहर हो जाता है, लेकिन क्या आप जानते हैं कि खिलाड़ी को क्रिकेट मैच में कितने प्रकार से आउट (Out) दिया जा सकता है?

क्रिकेट में बल्लेबाज के आउट (Out) होने की कुछ प्रमुख स्थितियाँ इस प्रकार हैं—

बोल्ड आउट—यदि गेंदबाज द्वारा फेंकी गई गेंद से विकेट गिर जाती है, तो बल्लेबाज को 'बोल्ड आउट' दिया जाता है।

कैच आउट—यदि गेंद बल्लेबाज के बल्ले अथवा उसके हाथ या दस्ताने से छूकर विपक्षी टीम के खिलाड़ी द्वारा लपक ली जाती है, तो बल्लेबाज को 'कैच आउट' दिया जाता है।

रन आउट—यदि बल्लेबाज द्वारा रन लेने के लिए दौड़ते समय क्रीज पर पहुँचने से पूर्व ही गेंद से विकेट गिरा

दी जाती है, तो बल्लेबाज को 'रन आउट' दिया जाता है।

पगबाधा या LBW : यदि बल्लेबाज गेंद व विकेट के बीच में अपना पैर या हाथ अड़ाता है, ताकि गेंद को विकेट पर लगने से बचा सके, तो बल्लेबाज को 'पगबाधा' या LBW आउट दिया जाता है।

प्रायः क्रिकेट के हर मैच में वह चाहे टेस्ट मैच हो अथवा एकदिवसीय मैच या 20-20 का मैच हो, एल.बी.डब्ल्यू. आउट करार दिए जाने वालों में शीर्ष बल्लेबाज भी शामिल होते हैं। यह सब गेंदबाज की चुस्त गेंदबाजी के कारण ही होता है। गेंदबाज बल्लेबाज को बोल्ड आउट करना चाहता है, जबकि बल्लेबाज इससे बचना चाहता है। फेंकी गई गेंद पर बल्लेबाज की नजर टिकी रहती है। उसे लगता है कि गेंदबाज की फेंकी गई गेंद सीधे विकेट की ओर जा रही है तब वह गेंद की दिशा बदलने के लिए अपनी टाँग या हाथ लगा देता है। अंपायर बल्लेबाज के इस एक्शन को ध्यानपूर्वक देख रहे होते हैं। अगर उन्हें ऐसा लगता है कि गेंदबाज द्वारा फेंकी गई गेंद सीधे विकेट की तरफ जा रही थी, तो वह तुरंत ही अपना फैसला इशारे से बता देते हैं।

कभी-कभी अंपायरों से भी चूक हो जाती है। इसका लाभ बल्लेबाज को मिलता है।

स्टंप आउट—आपने क्रिकेट मैच के दौरान देखा होगा, जब बल्लेबाज फॉर्म में होते हैं, तो गेंद को हिट करने तथा चौके-छक्के की बरसात करने की कोशिश में वह अपने क्षेत्र से बाहर आकर गेंद को हिट करने की कोशिश करते हैं। जब बल्लेबाज जोश में हो, तो इस तरह की घटनाएँ खूब देखी जा सकती हैं। कभी-कभी बल्लेबाज पर ज्यादा-से-ज्यादा रन लेने का दबाव बढ़ जाता है, तो ऐसी स्थिति में भी वह अपने क्षेत्र से बाहर आकर गेंद को हिट करने की कोशिश करता है। जब बल्लेबाज के बल्ले से रन नहीं बन रहा हो, तब भी वह ऐसा ही करता है। बहरहाल इन स्थितियों में बल्लेबाज को क्रीज छोड़ने के खतरे भी झेलने पड़ सकते हैं। ऐसी स्थिति में विकेटकीपर काफी सजग रहता है। वह जरा सा मौका लगते ही फुरती से गेंद पकड़कर, अगर बल्लेबाज के बल्ले गेंद न लग कर विकेट की ओर चली जाती है। तो ऐसी स्थिति में विकेटकीपर गेंद पकड़कर गेंद से विकेट गिरा देता है, जब तक बल्लेबाज अपनी पोजीशन सँभालता है अर्थात् अपनी जगह (क्रीज पर) पहुँचता है। यह **स्टंप आउट** होता है।

कभी-कभी अंपायर शीघ्र निर्णय लेने की स्थिति में नहीं होते, तो 'थर्ड अंपायर' के द्वारा इसका निर्णय किया जाता है कि क्या बल्लेबाज का अपने क्षेत्र में लौटने से पूर्व ही विकेटकीपर ने विकेट गिरा दी थी? वीडियो रिव्यू के बाद स्थिति साफ हो जाती है।

हिट विकेट—कभी-कभी बल्लेबाज से कोई बड़ी चूक हो जाती है, जब गेंद खेलते समय बल्लेबाज का बल्ला या पैर विकेटों से स्पर्श करके गिल्लियाँ गिरा देते हैं। हालाँकि ऐसा बहुत कम देखा गया है—पर मैदान में ऐसी घटनाएँ घटती हैं। यह बल्लेबाज द्वारा खुद ही आउट होने की त्रासदी होती है, जो उसके पछतावे का कारण बन जाता है। बहरहाल, इस तरह आउट होने पर बल्लेबाज को 'हिट विकेट' आउट दिया जाता है। प्रायः क्रिकेट के नए खिलाड़ी ऐसी गलतियाँ कर देते हैं।

हैंडलिंग दी बॉल—यदि बल्लेबाज गेंद से छेड़खानी कर रहा हो, तो अपील किए जाने पर हो सकता है कि अंपायर बल्लेबाज को 'हैंडलिंग द बॉल' आउट दे सके। ऐसे मौकों पर अंपायर काफी सोच-समझकर फैसला करता है। जब तक उसे नहीं लगे कि बल्लेबाज ने जानबूझकर ऐसा किया हो, तब तक विपक्षी टीम की किसी भी अपील का उस पर कोई असर नहीं पड़ता।

डबल हिट—यदि बल्लेबाज गेंद को दो बार हिट करता है, तो उसे 'डबल हिट' का आउट दिया जाता है, क्योंकि क्रिकेट के नियमों में एक नियम ऐसा भी है कि बल्लेबाज बॉल को 'डबल हिट' नहीं कर सकता।

टाइम आउट : बल्लेबाजी करते समय बल्लेबाज को समय का भी खयाल रखना पड़ता है। अगर बल्लेबाजी

करनेवाला खिलाड़ी जान-बूझकर देरी करता है अथवा निर्धारित समय से अधिक समय लगाकर आता है, तो उसे आउट 'करार' दिया जा सकता है।

अलग-अलग प्रकार के मैचों के लिए अलग-अलग समय निर्धारित किए गए हैं।

ऑब्स्ट्रक्शन ऑफ द फील्ड आउट— यदि बल्लेबाज जान-बूझकर कोई ऐसी गलती करता है, जिससे विपक्षी टीम के खिलाड़ी को विकेट तक पहुँचने में बाधा पहुँचती है अथवा कभी-कभी बल्लेबाज खिलाड़ी से जान-बूझकर टकरा जाता है अथवा उसका रास्ता रोक लेता है, तो विपक्ष की अपील होती है। अगर अंपायर को ऐसा लगता है कि बल्लेबाज ने जान-बूझकर खेल के नियमों का उल्लंघन किया है, तो वह उसे आउट (Out) करार दे सकता है। इसको ऑब्स्ट्रक्शन ऑफ द फील्ड (Obstruction of the field) कहा जाता है।



क्रिकेट खेल के सामान्य नियम

टेस्ट मैच

- टेस्ट मैच में दोनों टीमों दो-दो पारियाँ खेलती हैं।
- यह पाँच दिवसीय मैच होता है।
- विजेता वही टीम होती है, जो दोनों पारियों में विपक्षी टीम द्वारा प्राप्त स्कोर से ज्यादा रन बनाती है।
- टेस्ट मैच में एक दिन का मैच 90 ओवर का होता है।
- पहली पारी की समाप्ति की घोषणा के बाद दूसरी टीम खेलती है।
- अगर दूसरी टीम पहली टीम द्वारा प्राप्त रनों की संख्या से पीछे रह जाती है तथा निर्धारित समय में पारी समाप्ति की घोषणा हो जाती है अथवा दूसरी टीम के सारे विकेट गिर चुके होते हैं, तो पहली टीम को (पहली टीम का स्कोर - दूसरी टीम का स्कोर = शेष रन) शेष रनों की बढ़त मिल जाती है। इसके विपरीत दूसरी टीम को पहली टीम पर बढ़त मिल सकती है।
- दूसरी पारी खेली जाती है। बढ़तवाली टीम को मनोवैज्ञानिक लाभ मिलता है।
- दूसरी पारी में रनों का कुल योग।

माना कि मैदान में दो टीमों खेल रही हैं—A और B।

A टीम ने पहली पारी में 500 रनों का स्कोर खड़ा करके पारी समाप्ति की घोषणा कर दी है। अब B टीम खेलने मैदान में उतरती है। इस टीम ने पहली पारी में 450 रन बनाए और उसके सारे विकेट गिर गए अथवा निर्धारित समय पूरा हुआ, तो A टीम को $500 - 450 = 50$ रनों की बढ़त मिली।

अब दूसरी पारी खेलते हैं।

A टीम ने दूसरी पारी में 360 रन बनाए (कुल मिलाकर उसके रनों का योग होता है, पहली पारी में बढ़तवाला रन + दूसरी पारी का कुल रन = कुल रन 410 हुए।

मैच जीतने के लिए B टीम को 411 रन चाहिए। दूसरी पारी में B टीम को अपने बलबूते 411 रन बनाने होंगे। यदि यह लक्ष्य B टीम पूरा नहीं कर पाती है, तो वह मैच हार जाएगी। यदि B टीम ने दूसरी पारी में 410 रन बना लिए, तो मैच 'टाई' हो जाता है। यानी बिना हार-जीत के मैच समाप्त होता है।

खेल की भाषा में इसको ऐसा भी कहा जा सकता है कि यदि दोनों पारियों के अंत में दोनों टीमों का स्कोर बराबर हो, तो मैच 'टाई' माना जाता है।

क्रिकेट मैच में ड्रॉ (Draw) शब्द से आप भलीभाँति परिचित होंगे। ड्रॉ (Draw) का अर्थ होता है—मैच बराबर होना। यदि किसी कारणवश अंत तक मैच का परिणाम न आए, तो मैच बराबर यानी ड्रॉ (Draw) मान लिया जाता है। ऐसा अकसर खेल के दौरान, बारिश के कारण होता है, जब किसी एक टीम को पूरा मैच खेलने का मौका नहीं मिलता। यह रोशनी के कारण भी हो सकता है। यह सब परिस्थितियों पर निर्भर करता है।

पारी समाप्ति की घोषणा—मैदान में खेलने उतरी टीम का कप्तान जब चाहे अपनी टीम की पारी की समाप्ति

की घोषणा कर सकता है। ऐसा आमतौर पर तभी होता है, जब टीम ने एक बड़ा स्कोर खड़ा किया हो तथा उसे लगता है कि निर्धारित समय में विपक्षी टीम उसके स्कोर तक नहीं पहुँच सकती है।

फॉलोऑन—पहले खेलने उतरी टीम यदि पहली पारी के अंत में विपक्षी टीम से 200 रन आगे हो, तो वह विपक्षी टीम को फॉलोऑन (Follow-On) दे सकती है अर्थात् उस टीम को लगातार दूसरी पारी खेलने को कह सकती है। यह स्थिति एक तरह से प्रतिष्ठा से जुड़ी होती है और विपक्षी टीम को फॉलोऑन (Follow-On) बचाने के लिए खेलना होता है।

किसी टीम द्वारा निर्धारित समय में अपने ओवर पूरे नहीं करने पर दंड का विधान है।

एकदिवसीय मैच

- एकदिवसीय मैच 50-50 ओवर का होता है।
- प्रत्येक टीम 50 ओवर मैच खेलती है। अगर निर्धारित ओवर के पहले ही टीम की सारी विकेटें गिर जाती हैं, तो मैच की पारी वहीं समाप्त हो जाती है, क्योंकि खिलाड़ी होगा ही नहीं तो खेल क्या होगा।
- कभी-कभी एकदिवसीय मैचों में ओवर कम कर दिए जाते हैं। ऐसा किसी कारणवश हो सकता है; जैसे—रेनी सीजन में मौसम की मार, जलवायु परिवर्तन, पिच का अनुकूल न होना, आर्द्रता, ओस, तापमान, रोशनी आदि कई महत्वपूर्ण फैक्टर्स होते हैं, जिनके कारण मैच को संक्षिप्त ओवरों में खेलना होता है।
- क्रिकेट के नियमों में एक महत्वपूर्ण नियम यह भी है कि मैच के ओवर कम-से-कम 25 ओवर के जरूर होने चाहिए। इससे कम ओवर के मैच एकदिवसीय मैचों में नहीं होते।
- एकदिवसीय मैच में एक ही पारी खेली जाती है।
- जो टीम ज्यादा रन बनाती है, वही विजेता घोषित की जाती है।
- अगर गेंदबाज 'नो बॉल' फेंकता है, तो उसके दंडस्वरूप विरोधी टीम को फ्री-हिट का लाभ मिलता है। यह बल्लेबाज के लिए सबसे सुनहरा मौका होता है, जिसमें बल्लेबाज को अपनी क्षमता का प्रदर्शन करना चाहिए, क्योंकि फ्री-हिट में बल्लेबाज को रन-आउट के अतिरिक्त अन्य कोई खतरा नहीं होता। अनेक बल्लेबाजों ने फ्री-हिट के काफी लाभ उठाए हैं। सचिन तेंदुलकर ने तो एक फ्री-हिट पर लगातार दो छक्के जड़े थे। ऐसे और भी कई क्रिकेट खिलाड़ी हैं, जिन्होंने फ्री-हिट पर खूब चौके लगाए।

फ्री-हिट के दौरान मैदान में खिलाड़ियों की स्थिति भी नहीं बदली जा सकती है।

पावर प्ले—एकदिवसीय मैच में प्रत्येक टीम को 50 ओवरों में से 20 ओवर पावर प्ले के रूप में मिलते हैं। इसके अंतर्गत सीमा रेखा पर सिर्फ दो खिलाड़ियों को ही क्षेत्ररक्षण की अनुमति दी जाती है।

ट्वेंटी-ट्वेंटी (20-20) मैच

- यह मैच बीस ओवर का होता है।
- प्रत्येक टीम बीस ओवर या उससे कम ओवर खेल सकती है (यदि बीस ओवर से पहले ही टीम की सारी विकेटें गिर जाएँ)।
- यह तीन घंटे का मैच होता है।
- पारियों के मध्य बीस मिनट का मध्यांतर होता है।

- मैच पूरा होने के लिए दोनों टीमों द्वारा कम-से-कम पाँच ओवर पूरे किए जाने आवश्यक हैं।
- एक गेंदबाज अधिकतम चार ओवर बॉल फेंक सकता है।
- ट्वेंटी-ट्वेंटी मैच में समय का खासतौर पर खयाल रखा जाता है। दोनों टीमों को अपनी-अपनी पारी 75 मिनट में समाप्त करनी होती है। अगर कोई क्षेत्ररक्षण करनेवाली टीम ऐसा करने में असफल रहती है, तो बल्लेबाजी करनेवाली टीम को बोनस के तौर पर प्रति ओवर 6 रन प्रदान किए जाते हैं।
- पहले 6 ओवर में केवल दो क्षेत्ररक्षक 30 गज के दायरे के बाहर रह सकते हैं।
- शेष 14 ओवर में भी पाँच से ज्यादा क्षेत्ररक्षक 30 गज के दायरे से बाहर नहीं रह सकते।
- मैच के दौरान विकेट गिरने पर नए बल्लेबाज को मैदान में आने के लिए 30 सेकेंड दिए जाते हैं।
- यदि निर्धारित समय के अंदर बल्लेबाज मैदान में नहीं पहुँचता है, तो उसे 'टाइम आउट' दिया जाता है। हालाँकि ऐसा बहुत कम देखने को मिला है, जब बल्लेबाज समय पर मैदान में खेलने नहीं पहुँचा हो।
- आप टी.वी. में मैच देखते हुए पाते होंगे कि मैच के दौरान टीम दर्शक दीर्घा के अंदर वाले पैवेलियन के स्थान पर सीमा रेखा के नजदीक बैठती है। जब बल्लेबाज खेल रहे होते हैं तो बने पैवेलियम में सीमा-रेखा के नजदीक बने पैवेलियन में ही बैठा अगला बैट्समैन खेलने के लिए पूरी तरह तैयार रहता है। जैसे ही विकेट गिरती है, नया बल्लेबाज तेजी से उठकर मैदान की ओर भागता है।
- ट्वेंटी-ट्वेंटी मैच में भी 'नो बॉल' पर फ्री-हिट दिया जाता है। कोई भी गेंदबाज ऐसी जोखिम को उठाना नहीं चाहता, अतः वह सँभलकर गेंदबाजी करता है।

जैसाकि आप जानते हैं कि फ्री-हिट की स्थिति में बल्लेबाज को रन आउट के अलावा अन्य किसी भी तरीके से आउट नहीं किया जा सकता है। 20-20 के मैच में भी ये नियम लागू होते हैं।

एकदिवसीय मैच की तरह इस मैच में भी फ्री-हिट के दौरान मैदान में खिलाड़ियों की स्थिति नहीं बदली जा सकती है।

फ्री-हिट की स्थिति में विपक्षी टीम में एक प्रकार की खलबली सी मच जाती है, क्योंकि खिलाड़ियों के दिमाग में खेल के दौरान प्रायः दो प्रकार के दबाव बने रहते हैं—एक ही समय पर लक्ष्य पूरा करना है, दूसरे में 20 ओवर के मैच में ही एक अच्छा-खासा स्कोर खड़ा करना होता है, ताकि विपक्षी टीम को कड़ी चुनौती मिल सके। यही कारण है कि जब अंपायर एक हाथ को उठाकर वृत्त के रूप में घुमाकर; इस तरह से 'फ्री-हिट' का संकेत देता है, तो विपक्षी टीम में अचानक घबराहट महसूस की जाती है, दूसरी ओर बल्लेबाजी करनेवाली टीम का बल्लेबाज इस मौके का पूरा-पूरा फायदा उठाने की ताक में रहता है और फ्री-हिट की गेंद पर चौके-छक्के लगाने से कम नहीं सोचता। विश्व क्रिकेट के सभी धुरंधर बल्लेबाजों ने फ्री-हिट का पूरा-पूरा लाभ उठाया है।

एकदिवसीय मैचों की तुलना में ट्वेंटी-ट्वेंटी के मैचों में रफ्तार देखी जा सकती है, क्योंकि वैसे भी यह फटाफट का खेल है, अतः वह चाहे गेंदबाजी वाली टीम हो अथवा बल्लेबाजीवाली टीम, पूरी तरह सजग व चुस्त होकर खेलती है।

गेंदबाज के दिमाग में मुख्य रूप से दो बातें रहती हैं—एक विकेट लेना तथा दूसरा बल्लेबाज पर दबाव बनाना। अगर बल्लेबाज फॉर्म में न हो, तो गेंदबाज अपने उद्देश्य में हो जाता है। दूसरी ओर बल्लेबाजी करनेवाली टीम का कप्तान भी इसी तरह की रणनीति बनाकर खेलता है। विपक्षी टीम पर दबाव बढ़ाना, गेंदबाज को परेशान करना, बल्लेबाज का उद्देश्य होता है, ताकि परेशान होकर दबाव में आकर गेंदबाज गेंदबाजी करने में फिसल जाए तथा

गेंदबाज की खराब गेंद पर बल्लेबाज तगड़ा शॉट लगा सके।

प्रत्येक 'नो बॉल' पर बल्लेबाजी करनेवाली टीम को दो रन प्राप्त होते हैं।

